सरल हितोपदेश

उत्तर-प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत

सरल हितोपदेश

धर्मपाल शास्त्री

राजपाल

मूल्य : पचीस रुपये (Rs. 25.00)

संस्करण : 2010 © राजपाल एण्ड सन्ज़
ISBN : 978-81-7028-435-2
SARAL HITOPADESH by Dharmpal Shastri

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110 006

website : www.rajpalpublishing.com
e-mail : mail@rajpalpublishing.com

चालाक गीदड़

दो थे गीदड़; दोनों चुगलखोर। इधर की बात उधर और उधर की बात इधर लगाना उन्हें खूब आता था। जिस किसी भी उल्टे-सीधे उपाय से उनका उल्लू सीधा होना चाहिए; बस, यही था उनका उद्देश्य। इसी चुगलखोरी की बदौलत वे जंगल के राजा शेरशाह के मंत्री बन बैठे थे। उनमें से बड़े गीदड़ का नाम था करकट और छोटे का दमनक। बड़ा तो बड़ा था ही, पर छोटा भी किसी से कम न था। शेरशाह पर दोनों ने ऐसा रंग जमाया कि उनके परामर्श के बिना वह एक तिनका भी इधर से उधर नहीं रख सकता था।

एक बार किसी बनिए का बैल जंगल में से गुज़रते हुए दलदल में फँस गया। बनिए ने उसे निकालने का यत्न किया किन्तु जब किसी प्रकार भी बैल न निकल सका तो उसे भगवान के सहारे छोड़कर वह अपनी राह चलता बना। बैल की किस्मत में कुछ दिन और जीना लिखा था इसलिए किसी न किसी तरह हाथ-पाँव मारकर वह दलदल से बाहर निकल आया था। बस, फिर क्या था, उसे तो मानो स्वर्ग ही मिल गया।

दिन-भर वन में चुहल मचाता
खाता पीता मौज उड़ाता
मस्ती में जब करता गर्जन
गूँजा करता सारा वन

आखिर एक दिन शेरशाह ने भी बैल की गर्जना सुनी। उसके

लिए यह बिलकुल नई बात थी। आज तक उसने किसीको इस प्रकार निडर होकर जंगल में दहाड़ते नहीं सुना था। वह भी खूब पहचानता था कि यह आवाज़ किसी शेर की नहीं, इसलिए उसने अनुमान लगाया कि हो न हो, यह कोई 'बला' है, जिसकी आवाज़ सुनकर मेरा जी काँप रहा है। बेचारे शेरशाह की सारी वीरता धरी रह गई और वह दिन-रात दुबक-दुबककर रहने लगा। वह इतना डरा, इतना डरा कि उसने शिकार खेलना भी बन्द कर दिया। किन्तु उसने अपने डर की बात किसी से कही नहीं। करकट और दमनक पूरे पाजी थे, भला उनसे शेरशाह का डर कब तक छिपा रह सकता था। वे जानते थे कि शेरशाह के डर का कारण केवल बैल है, किन्तु सीधी तरह यदि वे उसे सच्चा हाल बताकर उसका डर मिटा देते तो उन्हें गीदड़ कौन कहता? दमनक ने करकट से कहा–

हाथ लगा है अच्छा अवसर
डर से राजा काँपे थरथर
उसका डर यूँ दूर भगाएँ
राजा पर अहसान चढ़ाएँ

करकट भी शैतान खोपड़ी का तो था ही। उसने अपनी सूझ की दाद देते हुए कहा–हाँ, भाई दमनक? कोई ऐसा काम करो कि यह बैल मरने न पाए और शेरशाह की नौकरी करना स्वीकार कर ले। फिर सारा कठिन काम बैल के सिर डालकर हम दोनों शेरशाह के साथ सैर-सपाटे किया करेंगे। आजकल तो मारे काम के सिर उठाने की फुरसत नहीं मिलती।

दोनों चुगलखोर चल पड़े। एक ने शेर को डराया और दूसरे ने बैल को बहकाया और दोनों पर अहसान चढ़ाते हुए कहा–यदि तुम हमारा कहना मानो, तो हम तुम्हारा डर आनन-फानन में दूर कर सकते हैं।

भला अंधा का क्या चाहे, दो आँखें। शेर और बैल इन गीदड़ों के कहने के अनुसार मित्र बन गए। यदि बैल भोला था, तो शेरशाह था भोलेनाथ। भोला और भोलेनाथ पक्के मित्र बन गए। वे इतने पक्के मित्र बन गए कि शेरशाह का ध्यान गीदड़ों की ओर से हटकर बैल के साथ बात करने में ही लग गया। बात गीदड़ों को चुभी।

वे सीधी तरह तो शेरशाह को कुछ कहने से डरते थे, इसलिए एक दिन दमनक ने शेरशाह को अकेला देखकर कहा—महाराज! यह बैल आपको मारकर अपने-आप राजा बनने की धुन में है। तनिक होशियार रहिए। कहीं ऐसा न हो कि आप पर हाथ चला दे और आपको पता तक न चले।

राजा लोग करने के कच्चे तो होते ही हैं। दो-एक बार कहने-सुनने से ही शेरशाह को विश्वास हो गया कि बैल सचमुच ही उसे मारकर जंगल का राजा बनना चाहता है। उसने निश्चय कर लिया कि अबकी बार बैल यहाँ आए तो उसे जीवित जाने नहीं दूँगा।

उधर करकट ने बैल के पास जाकर कहा–बैल भाई! तुम्हारी हमारे साथ कुछ देर अच्छी निभ गई है, इसलिए मैं तुम्हें अपना मित्र समझकर एक बात बताता हूँ। आजकल शेरशाह तुम पर नाराज़ हैं और शेरशाह के बिना तुम्हारा निर्वाह नहीं हो सकता, इसलिए तुम चुपके से जाकर उनसे क्षमा माँग लो। तुम्हें आता देखकर वे प्रसन्न हो जाएँगे और हो सकता है कि तुम्हें गले लगाने के लिए स्वयं ही आगे बढ़ आएँ। तब तक हम पहुँच जाएँगे और तुम दोनों की सुलह करवा देंगे। इस समय शेरशाह अकेले बैठे हैं, इसी समय जाकर उनसे क्षमा माँग लो।

यह कहकर करकट भी चलता बना। उधर शेरशाह भी क्रोध से भरा बैठा था ही; बैल को आता देखकर वह पंजा उठा कर खड़ा हो गया। बैल ने समझा कि करकट के कहे अनुसार वह मुझसे गले मिलने के लिए तैयार हो रहा है। यह सोचकर बैल और भी फुर्ती से आगे बढ़ा। शेरशाह से यह ढिठाई न सही गई। उसने एक झापड़ मारकर बैल को चित्त कर दिया।

पेड़ की आड़ में छिपे हुए दमनक ने करकट के कान में कहा–

देखो कैसी चुगली खाई!
मित्रों में भी हुई लड़ाई!

मुँह में राम बगल में छुरी

एक पेड़ के कोटर में एक बूढ़ा गीध रहता था। वह इतना बूढ़ा था कि उसके दोनों पंख झर चुके थे। आँखों से बिलकुल दिखाई न देता था और दोनों पंजे भी बेकार-से होने लगे थे।

उसी पेड़ पर हज़ारों पक्षी रहते थे। वे सब शाम को जब खुशी-खुशी अपने घोंसलों में लौटते तो वहाँ काफी रौनक-सी छा जाती। कुछ गाते, कुछ नाचते, कुछ ज़ोर-ज़ोर से चहचहाते। पर बेचारा गीध अपनी नीरस ज़िंदगी पर सोचते हुए उदास-उदास-सा ऊँघता रहता। उन पक्षियों में से कुछ ऐसे विचारवान भी थे, ज़िन्हें केवल अपने ही सुख और मौज का ख्याल नहीं था, बल्कि वे आसपास के पड़ोसियों के सुख-दुख का भी ख्याल रखते थे। उन्होंने जब उस गीध की ऐसी बुरी हालत देखी तो सज्जनता के नाते उन्हें दया आ गई। वे उसके बारे में कुछ इन्तज़ाम करने की सोचने लगे। सब मिलकर विचार कर रहे थे कि उनमें से एक बूढ़े और समझदार पक्षी ने राय दी–भाइयो, हमें ऐसा काम करना चाहिए, जिससे एक पंथ, दो काज हो जाए। हम इस बूढ़े गीध की मदद करेंगे। ठीक है, पर इससे भी आसानी से जितना काम ले सकते हैं अगर ले लें तो क्या हर्ज है? बल्कि यह सोचेगा, मैं किसी का एहसान नहीं ले रहा हूँ और हमारा भी काम हो जाएगा।

हमारे अण्डों और बच्चों के आए दिन दुश्मनों द्वारा उठाए जाने की दर्दनाक खबरें हमारे कई भाइयों ने दी हैं। अगर इसके लिए

पहरेदार इस वज्र चोंचवाले गीध को ही बनाया जाए और इसके बदले इसे खाना दिया जाए तो यह कैसा रहेगा—एक और समझदार चिड़िया ने अपनी राय ज़ाहिर की।

ठीक है, ठीक है। बहुत अच्छा। कहकर करीब-करीब सभी ने अपनी सहमति प्रकट की।

उस दिन से बूढ़ा गीध चिड़ियों की गैरहाज़िरी में अण्डों-बच्चों का पहरेदार बना दिया गया। और उसके बदले उसे भी भोजन मिलने लगा।

अब उसके दिन चैन से कटने लगे। उधर पक्षी भी अपने बच्चों की रखवाली का भार गीध को सौंपकर निश्चिन्त हो गए।

पर पास में ही एक काला-कलूटा बिलाव रहता था, जो कई बार पहले भी यहाँ के अण्डों-बच्चों पर हाथ साफ कर चुका था। गीध की यह पहरेदारी उससे देखी न गई। आखिर एक दिन वह स्वांग भरकर गीध के पास पहुँच गया।

गीध आँखों से अंधा था, इसलिए बिलाव की आहट सुनकर खतरे को आया जान ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा—

कहो, तुम कौन हो
जल्दी बताओ नाम अपना
बताओ काम अपना औ'
बताओ धाम अपना

बिलाव ने सुनकर थोड़ी देर के लिए चुप्पी साध ली।

फिर बड़ा गम्भीर होकर बोला—साधु महाराज, मैं आपकी शरण में ही इतनी दूर से चलकर आया हूँ।

कौन हो तुम? गीध ने गरजकर पूछा।

मैं बिलाव हूँ। वैसे तो मेरा नाम बदनाम है, परन्तु आपसे प्रार्थना है कि आप मेरी कहानी सुनकर ही मुझे यथोचित आदेश दें। —बिलाव

ने अपनी आवाज़ में बड़ी नरमी लाकर कहा।

गीध ठंडा पड़ गया। बोला—बोलो क्या काम है, जल्दी बताओ और भाग जाओ।

महाराज? मैं गंगा के पवित्र तट पर रहता हूँ। वहीं पूजा-पाठ

और ईश्वर का ध्यान चलता रहता है। इधर कुछ दिनों से वन के पक्षियों से आपके धार्मिक ज्ञान के बारे में आपकी बड़ी तारीफ़ सुनी है। मैं ज्ञान का प्यासा हूँ और आप ज्ञान के सरोवर हैं। अब आप ही बताएँ, मैं आपके पास न आता तो और कहाँ भटकता! गुरुदेव, आज मैं गंगा स्नान करके आया हूँ। आज का दिन बहुत ही अच्छा है और घड़ी भी शुभ है। मैं आपसे दीक्षा लेकर ही जाना चाहता हूँ। मैंने अहिंसा व्रत से अपने-आप को शुद्ध कर लिया है, अब आपकी दीक्षा की कसर है, फिर मैं पूरा साधु बन जाऊँगा।

धर्म की इतनी लंबी-चौड़ी बातें सुनकर गीध को बिलाव पर विश्वास हो गया। वह रोज़ गीध के पास आने लगा। इधर गीध अपनी तेज़ आवाज़ में उपदेश देना शुरू करता और उधर बिलाव दबे पाँव वहाँ से सरककर एक-एक कर चिड़ियों के अण्डों और बच्चों पर हाथ साफ करने लगता। इस तरह पूरी तरह पेट भर जाने पर ही वह टलता।

गीध बेचारे को कुछ पता नहीं था। चिड़ियाँ रोज़ इन शिकायतों पर विचार करतीं और फिर गीध से कल कहने की बात कहकर चुप हो जातीं। एक दिन वे सभी मिलकर आईं तो देखा कि अन्धे गीध के कोटर में चिड़ियों के बच्चों की हड्डियाँ और अण्डों के खोल पड़े हैं। सारी स्थिति जानकर चिड़ियों ने अपने सिर आप पीट लिए और क्रोध में आकर सारी की सारी उस गीध पर टूट पड़ीं और उसका कचूमर निकाल दिया।

बन्ने चला राज़ा, बन गया खाजा

एक था हाथी। वह देखने में तो–

बड़ा ही मोटा, बड़ा ही ताज़ा
बड़ा ही लंबा, बड़ा ही चौड़ा
लेकिन समझ-बूझ का भाव
उसमें तो था बड़ा ही थोड़ा

वह जंगल में सब जीव-जन्तुओं से बड़ा और बलवान था। उसे घमण्ड था कि कोई भी जन्तु वन में उसकी तुलना नहीं कर सकता। इधर तो हाथी अपने विषय में ऐसी बातें सोचकर मग्न रहता था, उधर जंगल का एक गीदड़ उसे मारकर उसका नर्म-नर्म माँस खाने की सोचा करता था। उसने दूसरे गीदड़ों को भी कह रखा था कि शीघ्र उन्हें हाथी का माँस खाने के लिए न्योता देगा।

एक दिन हाथी मग्न होकर जंगल की सैर कर रहा था कि गीदड़ उसके पास जा पहुँचा। गीदड़–

शीश झुका कर
मीठा स्वर भर
बोला सादर–

मैं हूँ करता तुम्हें प्रणाम
एक पड़ा आवश्यक काम
राजा रहित हुए हम लोग

राजा बनने के तुम जोग
चलो हमारे राजा बनकर
डटकर बैठो सिंहासन पर
बनो हमारे तुम अफसर
बनें तुम्हारे हम नौकर

यह सुनकर हाथी बहुत ही प्रसन्न हुआ और बोला—अरे गीदड़! भले काम में कभी देरी नहीं करनी चाहिए, इसलिए अभी चलकर मेरा राजतिलक करो!

गीदड़ यही तो चाहता था! वह हाथी को ऐसे स्थान पर ले गया, जहाँ नीचे कीचड़ था और ऊपर गीदड़ों ने जानबूझकर घास बिखेर रखी थी। हाथी ने उसे घास का मैदान समझा और वहीं से होकर आगे जाने लगा। उस स्थान पर पैर रखते ही वह दलदल

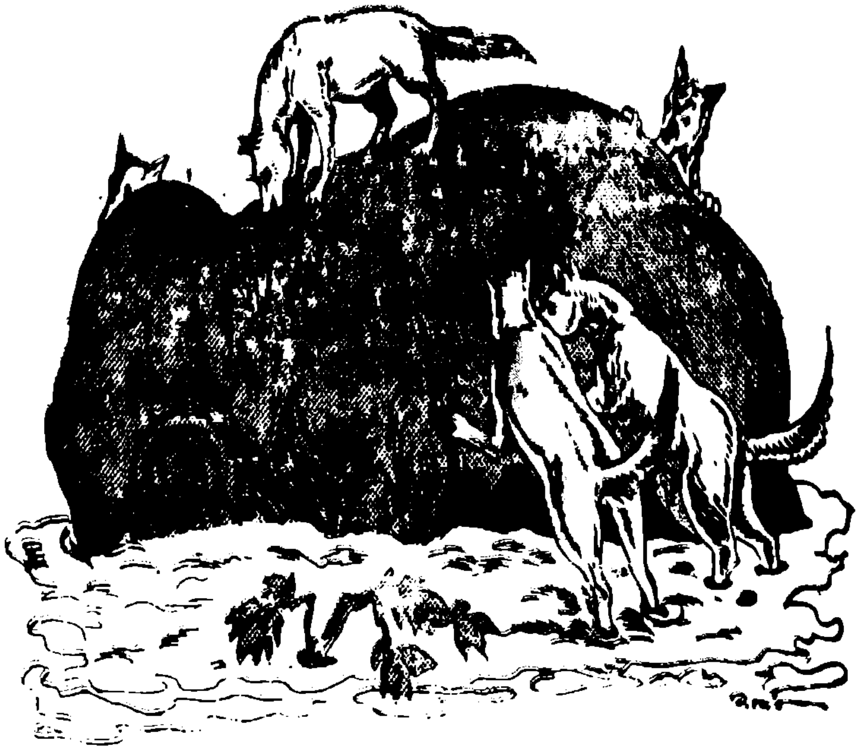

में फँस गया। वह निकलने के लिए जितना ही जोर लगाता था उतना ही अधिक कीचड़ में फँसता जाता था। जब उसके पाँव घुटनों तक धँस गए तो गिड़गिड़ा कर गीदड़ को कहने लगा–हे गीदड़! जंगल के दूसरे जन्तु मेरा राजतिलक करने की प्रतीक्षा में होंगे, इसलिए किसी प्रकार मुझे बाहर निकाल।

गीदड़ ने चिढ़कर कहा–

पकड़ो मेरी नन्ही दुम
निकल सको तो निकलो तुम
किन्तु बहुत ही हो तुम भारी
खींच न पाए सेना सारी
क्यों न बुलाऊँ सारे गीदड़
तुम्हें निकालें काट-काटकर

टुकड़े करने का नाम सुनकर हाथी चौंका। अब उसकी समझ में आया कि गीदड़ उसकी प्रशंसा क्यों कर रहा था। हाथी बड़ा पछताया कि मैं गीदड़ के कहने पर राजा बनने के लिए क्यों तैयार हो गया। किन्तु अब पछताने से क्या बनता था! गीदड़ ने झटपट जाकर अपने साथियों को सूचना दी–आओ, न्योता तैयार है। आज जी भरकर हाथी का माँस खाओ!

गीदड़ों ने हाथी को नोच-नोचकर खा लिया। बेचारा हाथी झूठी प्रशंसा में आकर राजा बनने चला था, किन्तु गीदड़ों का खाजा बनकर रह गया।

समय पड़े पर जानिए, को बैरी को मीत

एक था कौवा और एक था हरिण। दोनों में बड़ी मित्रता थी। कौवा पेड़ की डाल पर रहता था और हरिण पेड़ के खोखले तने में। दोनों सुख-दुख में एक दूसरे का साथ दिया करते थे।

एक दिन एक गीदड़ ने हरिण को अकेले बैठे हुए देखा। उसका मोटा ताज़ा शरीर देखकर गीदड़ के मुँह में पानी भर आया और वह सोचने लगा कि यदि किसी प्रकार इस हरिण का माँस खाने को मिले तो कितना अच्छा हो। यह सोचकर गीदड़ हरिण के पास गया और उदास मुँह बनाकर बोला—हे हरिण! तुम्हें देखकर मेरा जी चाहता है कि सदा तुम्हारे साथ रहूँ। मैं जंगल में अकेला रहकर उकता गया हूँ, इसलिए यदि तुम मुझे अपना मित्र बना लो तो कृपा होगी।

हरिण ने सहानुभूति दिखाते हुए कहा—आओ, गीदड़ भैया! तुम मेरे अतिथि हो। आओ, मेरे पास बैठो! जहाँ तक हो सकेगा, मैं तुम्हारी उदासी दूर करने का प्रयत्न करूँगा। किन्तु तुम अपना परिचय तो दो कि तुम कौन हो और तुम पर क्या बीती है। गीदड़ ने रुआँसा मुँह बनाकर कहा—

मैं हूँ एक अभागा गीदड़, सारे भाई-बहिन गए मर
रहता बन में निपट अकेला, कैसे काटूँ दुःख की बेला

हरिण भोला-भाला था। उसने गीदड़ की बात को सच माना और कहा—गीदड़ भैया! यदि ऐसी बात है तो मैं अभी तुम्हें मित्र बनाने को तैयार हूँ!

गीदड़ ने अपना रंग जमते देखा तो बहाना बनाकर बोला–हरिण मित्र–तुम्हारी इस सहानुभूति के लिए मैं धन्यवाद करता हूँ। यदि तुम मुझे अपने साथ रहने के लिए स्थान भी दे दो तो मेरे सब दुख कट जाएँगे। मुझे दिन-रात तुम्हारे साथ रहने का अवसर मिलेगा तो उदासी मेरे पास फटकने भी न पाएगी।

हरिण ने उत्तर दिया–जब हमारी-तुम्हारी मित्रता हो गई तो तुम्हें अपने साथ रखने में मुझे क्या संकोच हो सकता है! मेरे घर को तुम अपना ही घर समझो और आनंद से मेरे साथ रहो, खाओ-पीओ और मौज उड़ाओ!

यह सुनकर गीदड़ निश्चिन्त हो गया और हरिण के साथ इधर-उधर टहलने लगा। इतने में कौआ भी बाहर से लौट आया। उसने हरिण के साथ एक अनजान गीदड़ को घूमते हुए देखा तो हरिण से पूछा –हे मित्र! यह गीदड़ कौन है किसलिए तुम्हारे साथ घूम रहा है?

हरिण ने प्रसन्न होकर कहा–यह हमारा नया मित्र है, आओ मैं तुम दोनों का परिचय करा दूँ।

कौए ने कहा–पहले तुम सारी बात बताओ, मैं स्वयं परिचय कर लूँगा।

हरिण ने कहा–यह दुखिया गीदड़ है। इसके सब भाई-बन्धु मर गए हैं और यह जंगल में अकेला रहता है। अकेलेपन से उकताकर यह किसी मित्र की खोज करते-करते मेरे पास आ पहुँचा है और मैंने इसे अपना मित्र बनाना स्वीकार कर लिया है। अब यह मेरे साथ इस खोखले तने में ही रहेगा। क्यों मित्र कौए! इसे मित्र बनाकर मैंने ठीक ही किया है न? कौए ने कहा–

बिना किसी की आदत जाने, बिना किसी का मन पहचाने
उचित नहीं है मित्र बनाना, घर में देना उसे ठिकाना

हो सकता है कि यह गीदड़ ऊपर से मीठी बातें करता हो, किन्तु इसके मन में पाप हो। यह अवसर पाकर तुम्हें हानि पहुँचा सकता है। इसलिए एकदम किसी अपरिचित व्यक्ति को मित्र बनाकर उसे घर में रखने की सलाह मैं तुम्हें कभी न दूँगा। आगे तुम्हारी इच्छा!

हरिण ने दुनिया नहीं देखी थी, इसलिए उसकी समझ में न आया कि कौए की बात माने या गीदड़ की। उसने गीदड़ को अपने साथ रहने की आज्ञा दे ही दी। एक दिन गीदड़ ने बनावटी प्रेम दिखाकर हरिण को कहा–

मित्र हरिण इस जंगल में तो, सूखी भी न रही अब घास
चलो, हरे खेतों में जाएँ, जो कि यहाँ से बिल्कुल पास

उस समय कौआ वहाँ न था, इसलिए हरिण ने गीदड़ की बात पर कोई सन्देह न किया और उसके साथ चल पड़ा। थोड़ी दूर जाने पर सचमुच खरबूजे के हरे-भरे खेत दिखाई दिए। इन खेतों के मालिक ने जंगली पशुओं को पकड़ने के लिए खेतों में जाल बिछा रखा था। सुबह गीदड़ ने यह जाल देख लिया था अतः उसने हरिण को उसी ओर खेत में घुसने के लिए कहा, जिस ओर जाल बिछा हुआ था। बेचारे हरिण ने अभी तो खरबूजे को मुँह भी न लगाया था कि जाल में फँस गया। पहले तो वह घबराया किन्तु पीछे उसे विचार आया कि घबराने की क्या आवश्यकता है। मेरा मित्र गीदड़ मेरे साथ है, वह मुझे जाल से निकालने का यत्न करेगा।

यह सोचकर हरिण ने गीदड़ को कहा–मित्रवर! मैं तो जाल में फँस गया हूँ। किसी प्रकार जाल काटकर मुझे छुड़ाओ, नहीं तो अभी किसान आकर मुझे मार डालेगा।

गीदड़ ने तो जान-बूझकर हरिण को फँसाया था। क्योंकि उसे आशा थी कि किसान डंडों की मार से हिरण को मारकर फेंक देगा

और मैं आनंद से कई दिन तक उसका मांस खाता रहूँगा। फिर भला गीदड़ कैसे हरिण को जाल से छुड़ाता! उसने बात बनाकर कहा—

सुबह-सुबह यदि छू लूँ जाल, जूठे होंगे मेरे गाल
तुम ही सोचो अपने आप क्यों करवाते मुझसे पाप
ज्यों ही होगा सायंकाल, काटूँगा मैं तेरा जाल
पड़े रहो तुम तब तक यहीं, है इसमें कोई कष्ट नहीं

हरिण समझ गया कि गीदड़ के मन में पाप समाया हुआ है, किन्तु अब वह कर ही क्या सकता था! उसके पाँव तो जाल में फँसे हुए थे। न वह हिल सकता था, और न भाग सकता था। जीवन से निराश होकर वह पछताने लगा कि मैंने दुष्ट गीदड़ पर विश्वास करके इसे मित्र क्यों बनाया।

इतने में हरिण का पहला मित्र कौआ उसे ढूँढ़ता हुआ खेत के पास पहुँचा। कौए ने हरिण की यह दुर्दशा देखी तो बोला—भोले मित्र, मैंने तुझे पहले ही कह दिया था कि किसी अनजान प्राणी पर एकदम विश्वास नहीं कर लेना चाहिए। किन्तु अपने भोलेपन

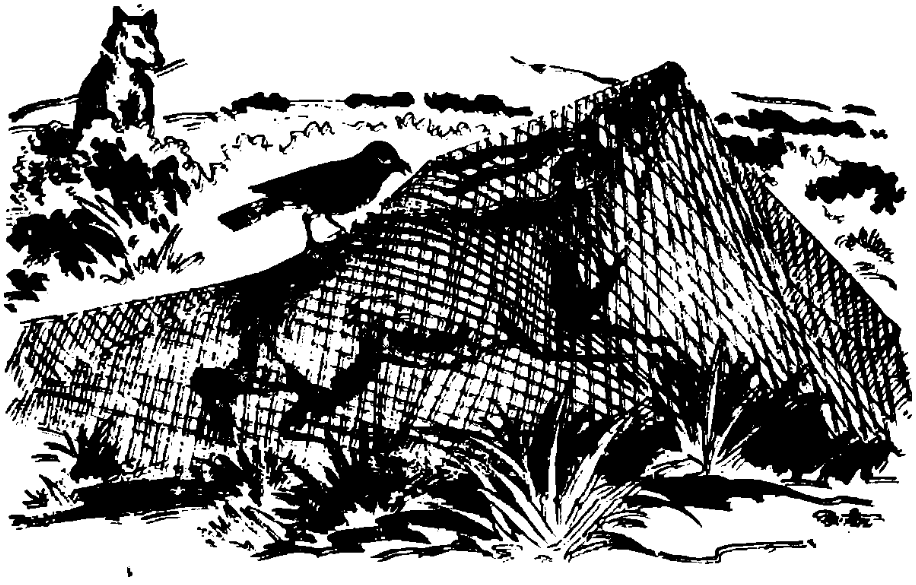

के कारण तूने मेरी बात न मानी और गीदड़ को अपना मित्र बना ही लिया। अब देख ले, उसी गीदड़ ने माँस खाने के लोभ से तुझे जाल में फँसाया है।

हरिण ने गिड़गिड़ाकर कहा—मित्र कौए! सचमुच मुझसे यह भूल हो गई है। किन्तु अब पछताने का समय नहीं है। यदि किसी प्रकार मुझे जाल से छुड़ा सकते हो तो छुड़ाओ, नहीं तो अभी किसान आकर मुझे मार डालेगा। मेरा माँस खाने के विचार से गीदड़ यहीं कहीं छुपा बैठा है।

यह सुनकर कौए ने कहा—मित्र हरिण! तू पेट फुलाकर, आँखें बन्द कर के और साँस रोककर लेट जा, जैसे कि तुझमें प्राण ही नहीं हैं। मैं झूटमूठ ही तेरे सिर पर बैठकर तेरी आँख नोचने का बहाना करूँगा। इस प्रकार तुझे मरा हुआ जानकर ज़्योंही किसान तेरे पाँव से जाल खोलेगा, त्योंही मैं काँव-काँव का शोर मचा दूँगा। मेरे शोर मचाते ही तू उठकर भाग जाना। साथ ही ध्यान रखना कि कहीं किसान का डंडा तुझे न लग जाए।

हरिण ने वैसा ही किया और मरे हुए के समान बनकर लेट गया। थोड़ी देर में किसान आया तो उसने हरिण को मरा हुआ जानकर उसके पाँव से जाल खोल दिया। उचित अवसर जानकर कौए ने काँव-काँव का शोर मचाया। हरिण छलाँगें लगाता हुआ भाग खड़ा हुआ। किसान ने क्रोध में आकर हरिण की ओर डंडा फेंका। वह हरिण को तो न लगा। किन्तु पौधों के झुण्ड की आड़ में छिपे हुए गीदड़ को जा लगा। गीदड़ वहीं ढेर हो गया। कौए ने हरिण के पास पहुँचकर कहा—गीदड़ को मित्र के साथ धोखा करने का फल मिल गया। किन्तु आगे से तुम सावधान रहना कि बिना सोचे-विचारे किसी अनजाने प्राणी पर पक्का विश्वास न कर बैठना।

धन की गरमी

एक थे बाबाजी। वे रोज़ सवेरे भिक्षा के लिए गाँव में जाया करते। वे घर-घर भीख न माँगकर मुहल्ले में खड़े हो जाते थे और चिमटा बजाकर कहते थे–

चिमटा बोले छम, छम, छम
बाबा बोले बम, बम, बम
लेंगे भिक्षा उससे हम
जिसमें हो देने का दम

यह कहकर बाबाजी अपने झोले का मुँह खोल देते थे। गाँव के बालक, स्त्री-पुरुष सब एक-एक मुट्ठी अनाज लेकर बाबाजी के पास वहीं पहुँच जाते थे। एक-एक मुट्ठी अनाज से ही उनका झोला भर जाता और सबको भभूती का प्रसाद देकर बाबाजी 'बम! बम!' करते हुए अपनी कुटिया को लौट जाते थे। वहाँ जाकर वे कुछ अनाज पका-चढ़ाकर स्वयं खाते, कुछ अपने अतिथियों को खिलाते और बचे-खुचे अनाज को एक छींके में रखकर लटका देते थे।

एक दिन बाबाजी के गुरुभाई उनसे मिलने के लिए आए। पेट-पूजा के बाद दोनों बैठकर धर्म-चर्चा कर रहे थे कि एक चूहा आकर छींके पर छलाँगें लगाने लगा। बाबाजी ने एक-दो बार चूहे को भगाया किन्तु वह बार-बार आकर छींके पर चढ़ने लगा। बाबाजी ने तंग आकर एक लम्बा डंडा ले लिया और धरती पर खटखटाने लगे। वे साथ-साथ बातें भी करते थे और डंडा भी खटखटाते जाते

थे। गुरुभाई ने देखा कि बाबाजी का ध्यान बातों में नहीं लग रहा तो वे कुछ उदास होकर बोले–

बड़ी दूर से चलकर मैं आया हूँ दर्शन पाने,
तुम तो बातों से उकताकर, डंडा लगे दिखाने।

बाबाजी ने बड़ी नम्रता से कहा–गुरुभाई! यह बात नहीं कि मेरा जी तुम्हारी बातों में नहीं लगता। मैं तो तुम्हारा एक-एक वचन ध्यान से सुनना चाहता हूँ, किन्तु यह चूहा सुनने ही नहीं देता। बार-बार छींके पर चढ़कर अनाज खराब करता है। इसने तो मेरी नाक में दम कर दिया है।

गुरुभाई ने पूछा–यह चूहा तो छोटा-सा है। और छींका छत के साथ बहुत ऊँचा लटक रहा है; फिर भी चूहा इतनी ऊँचाई तक कैसे पहुँच जाता है! साधारण चूहे तो इससे आधा भी नहीं उछल सकते। इस चूहे में कोई विशेष बात दिखाई देती है।

बाबाजी ने कहा–गुरुभाई! मैं बहुत दिनों से सोच रहा हूँ कि यह चूहा इतनी ऊँची छलाँग कैसे लगा लेता है! किन्तु मेरी समझ में कोई बात नहीं आई। आप ही बताइए कि क्या हो सकता है?

गुरुभाई ने कहा–

चूहे की इस उछल-कूद का
कारण है धन की गरमी
इतना ऊँचा कभी न उछले
यदि हो धन की इसे कमी
जाकर देखो उसके बिल में
होंगे विविध अनाज भरे
उनकी गर्मी से ही इतना
ऊँचा चूहा सेठ चढ़े

बाबा ने कहा—गुरुभाई! मेरा जी चाहता है कि अभी जाकर इस चूहे का बिल खोदकर देखूँ। हो सकता है कि आपका अनुमान ठीक ही निकले और चूहे की उछल-कूद का कारण धन की गरमी हो। इसलिए आप भी मेरे साथ चलें और देखें कि इसके बिल में

से क्या वस्तु निकलती है। बाबाजी की बात सुनकर गुरुभाई भी चूहे के बिल पर चलने को तैयार हो गए। वहाँ पहुँचकर बाबाजी ने बिल को खोदा तो देखते हैं–

कहीं लगे गेहूँ के ढेर,
कहीं भरे हैं सूखे बेर।
कहीं रोटियाँ पड़ी हुईं,
कहीं मिठाई धरी हुई।

यह देखकर गुरुभाई ने कहा–देखा! मैंने कहा था न, चूहे की उछल-कूद का कारण उसके घर में भरे हुए अनाज की गरमी ही है। यदि तुम इस अनाज को निकाल ले जाओ तो कल ही देखना कि चूहा पहले से आधी ऊँचाई तक न उछल सकेगा। यदि तुम्हें विश्वास न हो तो ऐसा करके देख लो। अनाज से घर खाली होते ही चूहे की सारी शक्ति-स्फूर्ति मिट जाएगी और वह साधारण चूहों की तरह हाथ-दो हाथ से ऊँची छलाँग नहीं लगा सकेगा।

बाबाजी ने वैसा ही किया। वे बिल में से गेहूँ, बेर, रोटियाँ, मिठाइयाँ सब कुछ उठाकर अपने साथ ले गए। दूसरे दिन गुरुभाई और बाबा दोनों पेट-पूजा करके फिर बातचीत कर रहे थे कि वही चूहा कुटिया में आया। पहले तो वह एक छलाँग में ही छींके तक पहुँच जाता था किन्तु आज बीसियों छलाँगें लगाकर भी उससे आधी ऊँचाई तक न पहुँच सका। यह देखकर बाबाजी बोले–गुरुभाई, आपकी बात बिल्कुल सत्य है–

धन की गरमी से बने, निर्बल भी बलवान।
और दिखाए अकड़ कर, दुगुनी तिगुनी शान॥

जिसका काम उसी को साजे

एक था धोबी। उसने एक गधा और कुत्ता पाल रखा था। एक रात को उसके घर में तीन चोर आए।

खरर खरर खर, घरर घरर घर
धोबी भरता खुर्राटा।
घरवाले सारे सोते थे
छाया था बस सन्नाटा।

चोर ने इस अवसर से लाभ उठाकर सब बहुमूल्य वस्तुएँ बटोर लीं और भागने की तैयारी करने लगे। कुत्ते ने यह सब कुछ देखा और चुपचाप आँखें मूँदकर सो गया। गधे को यह बात बहुत बुरी लगी। उसने कुत्ते को जगाकर कहा–अरे भाई! क्या तू देखता नहीं कि चोर घर का सारा सामान लूटकर ले जा रहे हैं? सब कुछ देखकर भी तू चुपचाप क्यों बैठा है? इस समय भौंककर धोबी को जगाता क्यों नहीं?

कुत्ते उत्तर दिया–मुझे क्या आवश्यकता है कि मैं भौंककर अपना गला थकाऊँ? चोर घर लूटकर ले जाते हैं, तो ले जाने दे। मैं तो धोबी को कभी न जगाऊँगा।

गधे न धमकाकर कहा–सचमुच तू कितना नीच है कि समय पड़ने पर अपने स्वामी की सेवा नहीं करता। यदि तू भौंककर स्वामी को जगा नहीं सकता तो इस घर में तेरे रहने से लाभ ही क्या है?

कुत्ते ने कहा–गधे भाई, तुम पूरे गधे ही हो। क्या तुम्हें पता नहीं–

पहले देता था मैं पहरा
जाग-जागकर सारी रात।
जिसके बदले धोबी देता
मुझे न मुट्ठी-भर भात।
तुम्हीं बताओ ऐसे स्वामी
का मैं भला करूँ क्यों काम?
मुझे पड़ी क्या आवश्यकता
नित्य करूँ मैं नींद हराम

कुत्ते की बात सुनकर गधे को बड़ा क्रोध आया। उसने कहा हे कुत्ते! यदि तू भौंककर स्वामी को नहीं जगाता तो मैं ही उसे जगाता हूँ। यह कहकर गधा गले का पूरा बल लगाकर चिल्लाया–

ढींचू! ढींचू! ढींचू!; ढीन,
घर में आए चोर तीन!
कुत्ता बैठा है चुपचाप,
स्वामिन! उठिए अपने-आप।

गधे का शब्द सुनकर धोबी की नींद खुल गई और वह बड़बड़ाता हुआ गधे पर पिल पड़ा कि दुष्ट गधे! तूने इतनी ज़ोर से चिल्लाकर मेरी नींद खराब कर दी है! धोबी ने गधे को इतना पीटा कि वह अधमरा-सा हो गया। जब धोबी आँखें मलता हुआ फिर बिस्तर पर सो गया तो कुत्ते ने गधे को चिढ़ाकर कहा–चख लिया न तूने दूसरे के काम को अपने हाथ में लेने का फल!

घंटेवाला भूत

एक था ठठेरा। वह पीतल के घंटे और घंटियाँ बेचा करता था। एक बार वह बड़ा-सा घंटा लेकर जंगल में से जा रहा था कि एक शेर ने उसे मार डाला। शेर ने ठठेरे को खा लिया और घंटा जंगल में ही पड़ा रहा। बन्दरों ने उस अद्भुत वस्तु को जंगल में पड़े हुए देखा तो उलट-पलटकर देखने लगे। जब उन्हें पता चला कि वह बजता भी है तो उन्होंने उसे वृक्ष पर टाँग दिया। जब उनके जी में आता, वे उसे टनटन बजाने लगते। रात के समय तो वे विशेष रूप से उस घंटे को बजाया करते थे।

प्रतिदिन रात के समय जंगल में घंटा बजता हुआ सुनकर नगरवाले डर गए। उन्होंने समझा–

टन-टन-टन-टन घंटा बजता,
भूत नाचता जंगल में।
आकर किसी समय बस्ती में,
खा सकता है भूत हमें।

धीरे-धीरे सारे नगर में घंटेवाला भूत प्रसिद्ध हो गया। उसके भय से ग्वालों ने जंगल में गौएँ चरानी छोड़ दीं, लकड़हारों ने लकड़ियाँ काटनी बन्द कर दीं। सब नगरवासी घंटेवाले भूत से इतने डर गए थे कि उसे भगाना तो दूर रहा, स्वयं ही नगर छोड़कर भागने लगे।

उस नगर में एक चालक बुढ़िया भी रहती थी। उसने मन में सोचा–हो न हो, यह बन्दरों की करतूत है। किन्तु लोगों को सच

बात न बताकर घंटेवाले भूत को भगाने का बहाना करके कुछ धन कमाना चाहिए। यह सोच-कर बुढ़िया राजा के पास गई और बोली–

मैंने करके बड़ी तपस्या,
सीखी है भूतों की विद्या।
घंटेवाले को तप-बल से,
अभी भगा सकती जंगल से।

राजा ने कहा–हे माई? घंटेवाले भूत के कारण राज्य के सब कामकाज बंद पड़े हैं, इसलिए यदि तू उसे भगा देगी तो मैं तुझे मुँहमाँगा इनाम दूँगा। किन्तु शर्त यह है कि भूत एक बार जाकर फिर कभी जंगल में न आए।

बुढ़िया ने यह स्वीकार कर लिया।

उसने चुपके से कुछ भुने चने गठरी में बाँध लिए और घंटेवाले भूत को भगाने के बहाने से अकेली ही जंगल की ओर चल पड़ी। वहाँ पहुँचकर उसने सारे चने पृथ्वी पर बिखरे दिए, जिन्हें देखकर बन्दरों ने घंटे को छोड़ दिया और चने खाने में लग गए। बुढ़िया ने उचित अवसर देखकर वृक्ष पर से घंटा उतारकर एक तालाव में डुबो दिया। नगर में आकर उसने प्रसिद्ध कर दिया कि मैंने घंटेवाले भूत को अपनी तपस्या के बल से जंगल में से निकाल दिया है। अब वह कभी लौटकर न आएगा।

जब राजा ने देखा कि बहुत दिनों तक घंटा बजने का शब्द सुनाई नहीं दिया तो उसने बुढ़िया को बुलाकर बहुत-सा इनाम देकर उसे प्रसन्न किया।

पुरस्कार लेते समय बुढ़िया मन ही मन कह रही थी कि राजा सहित सारे नगरवासी कितने मूर्ख हैं कि केवल एक घंटे के शब्द को सुनकर डर गए थे।

अकल बड़ी या भैंस

किसी जंगल में एक शेर रहता था। उसमें एक बुरी आदत थी। पेट भरने के लिए उसे एक पशु का मांस पर्याप्त होता था, फिर भी वह मन-बहलाव के लिए कई पशुओं को मार दिया करता था। दिन-प्रतिदिन जंगल के पशु घटने लगे।

एक दिन जंगल के जीवों ने एक सभा बुलाई। उसमें भालू भैया, गीदड़ गवैया, लूमड़लाल, हरिण तथा हाथी आदि सब जन्तु इकट्ठे हुए। उन्होंने निश्चय किया कि शेरशाह के पास जाकर उससे कोई समझौता करना चाहिए ताकि वह व्यर्थ ही जंगली जन्तुओं को न मारा करे। वे जलूस निकालकर शेरशाह के पास पहुँचे और सबने–

शेर राजा अमर रहे,
राज्य उसका अटल रहे।
कोई भी न दुःख सहे,
राजा प्रजा निडर रहे।

के नारे लगाने आरंभ कर दिए। शेर ने अपनी प्रशंसा के नारे सुने तो बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने जुलूस में आए सब जन्तुओं को अपने पास बुलाया और आने का कारण पूछा। लूमड़लाल ने सबसे आगे बढ़कर शेर को प्रणाम किया और कहा–राजन्! हम लोग आपकी प्रजा हैं, इसलिए हम अपने दुःख की बात आपसे निवेदन करने आए हैं। बात यह है कि यदि आप अपना दिल बहलाने के लिए

हममें से प्रतिदिन दस-दस जन्तुओं को मारते रहे तो कुछ ही दिनों में जंगल के सब जन्तु समाप्त हो जाएँगे। उससे हमारा वंश तो नष्ट हो ही जाएगा किन्तु आपको भी कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। आपको अपना पेट भरने के लिए भी मांस मिलना असम्भव हो जाएगा। इसलिए हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप पशुओं का नाश करना बंद कर दें।

शेर ने कहा–तुमने यह बात तो बड़ी समझदारी की की है, किन्तु तुमने यह नहीं सोचा कि यदि मैं तुम लोगों का शिकार न करूँ तो खाऊँगा क्या?

लूमड़लाल ने कहा–महाराज। यह सारी बात सोच-विचार कर ही हम लोग आपके पास आए हैं। हमने निश्चय किया है–

बारी बारी आपको,
देने अपना मांस,
आएगा प्रति दिवस पशु,
एक आपके पास॥

शेर ने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और उस दिन के उपरान्त प्रतिदिन एक पशु शेर के भोजन के लिए जाने लगा। एक बार एक खरगोश की बारी आई। अपनी बारी के अनुसार अपना मांस देने के लिए खरगोश को शेर के पास जाना पड़ा। खरगोश घर से चल पड़ा, किन्तु समय पर शेर के पास न पहुँचा। वह एक कुँए पर बैठकर शेर को मारकर अपने प्राण बचाने का उपाय सोचने लगा। उसे यह तो निश्चय ही था कि लड़कर शेर को कभी मार नहीं सकता। इसलिए उसने अपनी बुद्धि के बल से शेर को मारने का उपाय सोच लिया और उसके पास जा पहुँचा।

खरगोश के देर से आने के कारण शेर को बड़ा गुस्सा चढ़ा

हुआ था। खरगोश के आते ही उसने कड़ककर पूछा–हे दुष्ट खरगोश! सच बता, कि तू देर से क्यों आया है?

खरगोश ने हाथ जोड़कर, शीश झुकाकर, गिड़गिड़ाकर कहा–महाराज! आप मालिक हैं, जैसा चाहे करें पर मेरी बात सुन लें!

शेर गरजा–जल्दी बोल, मुझे ज़ोर की भूख लगी हुई है!

खरगोश ने कहा–महाराज, मुझे छोटा समझकर ही सब जानवरों

ने मेरे जैसे पाँच और खरगोश आपके खाने के लिए भेजे थे, पर रास्ते में आज एक और शेर मिल गया। वह अपने को इस जंगल का बादशाह बताकर मेरे पाँचों साथियों को खा गया। मुझे उसने यह कहकर छोड़ दिया कि आपको जाकर खबर दे दूँ, जिससे आप लड़कर फैसला कर लें।

खरगोश की बात सनुकर शेर आगबबूला हो उठा और गरजकर बोला जल्दी बता, वह है कहाँ! मैं अभी उसे मारकर फिर तुझे खाऊँगा। खरगोश रास्ता बताते हुए आगे-आगे चल पड़ा और बोला—महाराज, वह बड़ा बलवान है, ज़रा संभलकर लड़ना। ऐसा कहते हुए वह शेर को उसी कुएँ पर ले गया जहाँ वह दिन-भर बैठा रहा था। वहाँ आकर कहने लगा—देखा महाराज, वह आपको देखते ही डर गया और अपने किले में जा छिपा है। अब तो आप उसे मार ही डालिए, जिससे वह फिर कभी सिर न उठाए।

शेर ने पूछा—शेर का किला कहाँ है? मैं अभी मार डालूँगा। खरगोश ने कुएँ के अन्दर की ओर इशारा किया। शेर कुएँ में झाँका तो पानी में उसे अपनी परछाई दिखाई दी। वह अत्यन्त क्रोध में आ गया और ज़ोर से गरज़ा। कुएँ से उसकी आवाज़ की प्रतिध्वनि उससे भी ज़ोर की निकली। शेर ने उसे अपने दुश्मन का गर्जन समझा और उसे मारने वह कुएँ में कूद पड़ा और डूबकर मर गया। खरगोश नाचता-गाता अपने घर लौट चला और सभी जानवरों को बुलाकर शेर के मरने की खुशखबरी सुनाई।

जो काम ताकत से नहीं होता, वह अकल से हो जाता है।

●●●